सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU
TATV BODH

ubl fnYyh
vad & 114

Jh lkbl 'kd ½ 30
vxLr& 2012

Å¡

AA Jh lkbZukFkk; ue%AA

AA Jh lnx:ukFk nknk; ue%AA

x: ikf.kek ¼fujr½

x: cèk&Hkfxuh ;k l

आज गुरूपौर्णिमा और वं. दादा जी का शुभ दिन मंगलवार, ऐसा दोगना संयोग है। गुरूपौर्णिमा यह दिन हम मनाते है लेकिन क्या यह दिन कोई सभारम्भ (Meeting) करने का दिन है? या सिर्फ गुरू को याद करने का यह दिन है?

गुरूपौर्णिमा मतलब गुरू + पौर्णिमा

मतलब गुरू का रूप का पूर्णत्व याने गुरू अवस्था की हमारे माध्यम में पूरी तरह साकार होना।

इस जगत में, पृथ्वी पर त्रिगुणात्मक शक्ति का पूर्णत्व मतलब 'लय तत्व' चाँद के माध्यम से प्राप्त होता है जो पौर्णिमा के दिन सबसे अधिक शक्ति धरती पर प्रवाहित करता है, वैसे ही गुरूपौर्णिमा मतलब ईश्वरी शक्ति या ब्रह्माण्ड शक्ति का पूर्णत्व भक्तों के जीवन में श्री गुरू के माध्यम से पूरी तरह साकार होना, मतलब भक्त/सेवक के माध्यम से गुरूशक्ति पूरी तरह प्रवाहित होती रहना। यह दिन कोई सभा नहीं है तो हर एक भक्त के जीवन का यह ध्येय (Aim) है, या होना चाहिये। इसी माने से हम आरती में गाते है कि,

– स्वरूपी प्रिती धुरी (मानव देही)
– शुद्ध प्रेम स्वरूपे दत्त (तुझिया चरणी प्रिती रे)
– परम् शुभ स्वरूप तुझे रे (मूढ दास भी)
– दत्त स्वरूपी रमलो (तुज करीता मी जन्मा आलो)
– बुठलों स्वरूप डोटी रे (सदा प्रिती तुझे पायी)
– स्वरूप तुझे नाही पाहियले (केवी भजन करू अपधुता)

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

यहाँ 'तुझे स्वरूप' मतलब तुम्हारा स्वरूप मुझे देखना है इसका मतलब है कि – स्वरूप स्व+रूप 'मतलब भक्त गुरू को कहता है कि तुम्हारी शक्ति का रूप मेरे (खुद के) माध्यम में मुझे देखना है। तुम्हारा स्वरूप देखना है मतलब मुझे तुम्हारा दर्शन चाहिये ऐसा नहीं है; तो मेरे माध्यम में तुम्हारे शक्ति का रूप साकार कब होगा, यह भावना हम सभी गुरू भक्तों को रखनी चाहिये।

शास्त्र के अनुसार चार मुक्ती की प्राप्ति को गये तो जीवन का सार्थक हो जाता है लेकिन गुरू मार्ग से मुक्ती नहीं है; यहाँ गुरूपौर्णिमा का ध्येय रखकर भक्ती करनी होती है और फिर अखंड गुरू कार्य करना है। गुरूमार्ग में इन चार मूक्तियों का साधन यह है कि पहली मुक्ती – 'सलीकता' मतलब गुरूभक्ती करते समय ऐसा बोध होता है कि तीनों लोकों में सबसे श्रेष्ट गुरू की अवस्था है। गुरू शक्ति ने तीनो लोकों को समा लिया है। यह श्रद्धा, ऐसा विश्वास भक्तों के मन में होना चाहिये और वह काया–वाचा–मन से सेवा करने लगता है तब दूसरी मुक्ती की प्राप्ति होती है, वह है 'समिपता' – मतलब सेवा, साधना और आचरण करके गुरू की अवस्था के समीप, याने नजदीक जाना। तीसरी मुक्ती, जो शास्त्र में लिखी है वह है 'सरूपता', मतलब गुरू स्वरूप होना। इसी का मतलब है गुरू पौर्णिमा साकार होना। गुरू शक्ति का स्वरूप हमारे माध्यम में आकार लेकर विश्व भलाई के लिये गुरू कृपा में कार्यान्वित होना, साकार होना।

शास्त्र में चौथी मुक्ती लिखी है, साचुज्यता। लेकिन गुरूकृपाशीर्वाद की प्राप्ति हो गई तो :

इहभोग न लगे परभोग न लगे, न लगे सायुज्य ने ही, न लगे आणिक काली।
झाठी चरण धूल मस्तकी माझया, न लगे आणिक काली।

ऐसी गुरूपौर्णिमा साकार होना यह ध्येय हम सभी का होना, लेकिन इसके लिये खुद के जीवन को आकार देना यह हमारा प्राथमिक कर्त्तव्य है खुद के लिये बाद में कार्य और दूसरों के लिये। यह आकार नित्य ऊँकार साधना, सेवा आचरण, आरती साधना और मुलाखात साधना का नियमित रूप से लाभ लेकर प्राप्त होता है। तब उस आकार को साकार करना हमारा नहीं, बल्कि श्री गुरू पर निर्भर करता है। इसकी पहचान श्री गुरू के अलावा कोई और कर नहीं सकता।

किस भक्त के पास किस प्रकार का कर्म है और उसे कब साकार करना है इसका गणित सिर्फ श्री गुरू के पास रहता है। भक्त को नियमित रूप से शुद्ध भक्ति तथा आचरण रखकर नित्य उपासना करना चाहिये। नियमित उपासना या कार्यकेन्द्र पर नित्य सेवा करते समय जो कि निर्पेश और निस्वार्थ हो। हमारी भावना में क्या बदलाव आ रहा है, इसका नित्य अभ्यास करना चाहिये। क्या हमारी श्रद्धा बढ़ रही है? पहली बार जब सेवा की तो जितनी श्रद्धा से, मन से की थी, क्या अब उससे अधिक श्रद्धा है? या क्या उतनी भी श्रद्धा आज सेवा करते समय व्यक्त होती है? या अब औपचारिक (Routine) रूप से और कार्यों की तरह इसको भी पूरा करना है मतलब पूजा औपचारिक रूप से बिना श्रद्धा के हो रही है? इसका अभ्यास आज की अवस्था में करना आवश्यक है। पूजा या कोई भी अन्य सेवा जैसे देवघर साफ करना, चप्पल लगाने से बाबा को चंदन लगाने तक, या प्रतिमाओं को स्नान करने तक किसी भी सेवा में मन को समाधान मिल रहा है? क्या भावातीत अवस्था के ओर हम बढ़ रहे हैं? कौन सा गुरू कार्य किस के माध्यम से कर लेना है यह सिर्फ गुरू निश्चित करते है क्यों कि यहाँ आने वाला हर एक भक्त अपने कर्म की तकलीफ दूर करने के लिये आता हैं उसे सेवक अवस्था श्री गुरू ने प्राप्त कर दी। वह सेवक खुद से अपने आपका भी दुःख निवारण नहीं कर सकता तो दूसरों का दुःख क्या निवारण करेगा। वं. दादा जी ने निराकरण सिद्ध किये, निवारण कार्यन्वित किये, आसन सिद्ध किया, इस कार्य को सिद्ध किया और आने वाले भक्त को भी सेवक अवस्था देकर सिद्ध कर रहे है।

इस कार्य की सिद्धता में गुलबर्गा के श्री ख्वाजा नजाम वंदे साहब का काफी बड़ा सहयोग है। वह सब जब छोटे से, 8–10 साल के थे तब परिवार के साथ, उनके गुरू श्री नसिरूद्दीन बाबा (चिराग दिल्ली) को मिलने गये थे, तब नसिरूद्दीन बाबा ने श्री बंदे नवाज जी की माँ को कहा था कि अपने इस बेटे को यहाँ छोड़ के जाना, उसका आपके जीवन में कोई काम नहीं है, तो उसे जगतकल्याण के लिये आगे बड़ा काम करना है। तब आठ–दस साल की उम्र से श्री बंदे नवाज जी ने गुरू सानिध्य में जो सेवा आरम्भ की वे अस्सी साल की उम्र तक की, तब श्री नसिरूद्दीन बाबा ने उनको कहा कि अब तुम्हारी सेवा साकार हो गई तुम्हें दक्खन में जाकर आगे कार्य करना है।

हमें अगर अपनी अस्सी साल की उमर तक सेवा करके फिर गुरू ने कार्य करने के लिये कहा तो हमारी सोच क्या होगी? क्या हमारी श्रद्धा इतनी दृढ़ है? क्या हमारे पास इतनी सबुरी है? असल में सबुरी तो गुरू के पास है। जब हमारी श्रद्धा तैयार हो जायेगी तब वो सबुरी हमें दे देंगे।

श्री बंदे नवाज जी ने गुरू आज्ञानुसार दक्खन में, मतलब क्षेत्र गुलबर्गा में आकर आगे पच्चीस साल कार्य किया। इसका मतलब है गुरू पौर्णिमा, गुरू पूर्णत्व अपने माध्यम में साकार करना।

इतनी श्रद्धा और भक्ति हममें न होने के कारण भी वं. दादा जी ने भक्तों को सेवक या साधक बनाने से पहले ही उनके माध्यम से कार्य का आरम्भ किया है। मतलब यहाँ का हर एक भक्त? सेवक अवस्था का पूर्णत्व होने से पहले ही गुरू कृपा से कार्य करने लगता है। अगर कार्य केन्द्र पर सौ व्यक्ति नियमित रूप से है तो वे सौ भक्त गुरूकृपा से सेवक अवस्था में है। इसका मतलब यह नहीं है कि सौ व्यक्ति अब कामकाज करेंगे, जो गुरू आज्ञा अनुसार इनमें से कोई भी व्यक्ति गुरू कार्य कर सकता है लेकिन कौन–सा कार्य कब किसके माध्यम से कर लेना इसका गणित तो सिर्फ गुरू के पास है। आज हम सभी एक महत्वपूर्ण गुरू कार्य कर सकते है वो है "अनुष्ठान साधना।"

हफ्ते में एक बार हर एक कार्य केन्द्र पर अनुष्ठान किया जाता हैं इस अनुष्ठान से श्री गुरू की सिद्धताओं के अनुसार गुरू शक्ति का पुनरूज्जीवन होता रहता है। वं. दादा जी ने एक बार ऐसा कहा था कि अनुष्ठान का मतलब है कि ईश्वर ने खुद हमसे मिलने के लिये आना है। याने वं. दादा जी की सिद्धता के अनुसार और गुरूवचन के अनुसार, "अनुष्ठान साधना से" गुरूशक्ति का आह्वान होकर वह कार्य केन्द्र पर पुनरूज्जीवित हो जाती है, जिसका लाभ आने वाले हर एक भक्त को होता है (निराकरण में/आरती में/मुलाकात में और परम् पूज्य बाबा ने वं. दादा जी को वचन दिया है कि अनुष्ठान और आरती साधना में, मैं एक क्षण तो वहाँ जरूर आकर जाऊँगा। ऐसी गुरूशक्ति पुनरूज्जीवित होते समय, अनुष्ठान साधना करने वाले सेवको के माध्यम से एक छोटा सा गुरू अंश धारण होता है जिससे उस व्यक्ति का विकास होने लगता है और आने की अवस्था के लिये वह तैयार होने लगता है।

इसलिये अनुष्ठान साधना यह एक महत्वपूर्ण गुरूकार्य है। इसका लाभ हर एक भक्त को ज्यादा से ज्यादा लेने की कोशिश करनी चाहिये क्योंकि इसी के माध्यम से आगे की गुरूपौर्णिमा मनायी जानी है। यह विकास धीरे–धीरे होगा, क्योंकि श्री गुरू ने गुरूशक्ति हमें प्रदान कर दी है लेकिन आज हमारी धारणा शक्ति कम पड़ रही हैं इसलिये हफ्ते के सात दिन दैनंदिन ऊँकार साधना और एक दिन कार्य केन्द्र पर अनुष्ठान में उपस्थित रहना जरूरी है। दैनंदिन ऊँकार साधना का हर एक अंग सौ प्रतिशत आवश्यक हैं। उसमें कोई Short cut नहीं। न्यास नहीं किया या नामःस्मरण कम किया तो हमारा विकास कम होगा। दिन के चौबीस घंटों में पैतीस मिनट खुद के विकास के लिये देना अत्यावश्यक है क्योंकि यह विकास अनेक जनम साथ रहने वाला है। और उसी पर गुरूकृपा कार्यान्वित होने का गणित साकार होगा। इस प्रकार नियमित उपासना योग्य आचरण करते करते एक दिन आयेगा जब गुरूशक्ति पूरी तरह अपने माध्यम से कार्यन्वित होगी, गुरूशक्ति का पूर्णत्व अपने माध्यम में साकार होगा वही गुरूपौर्णिमा है। वह उत्सव देह माध्यम के अंदर मनाया जायेगा। यह ध्येय रखकर आज हम सभी गुरूभक्तों को अपने अपने जीवन की दिशा आज निश्चित करनी है। अपना विकास श्री गुरू कर लेंगे लेकिन रोज के जीवन में निश्चितता तो हमें लानी है। सब कुछ गुरू ही करेंगे ऐसा सोच के कोई लाभ नहीं होगा, हमने ऊँ कहा तो उस ऊँकार को साकार श्री गुरू जरूर करेंगे लेकिन हमें ऊँ तो पहले बोलना आवश्यक हैं दैनंदिन साधना नियमित रूप से करके अनुष्ठान साधना को उपस्थित रहने का निश्चय आज हमें करना है, जिससे गुरूकार्य की शुरूआत व हमारे माध्यम में गुरूकृपा हो जायेगी। फिर गुरूरूप का पूर्णत्व हममें से हर एक माध्यम में गुरूकृपा से एक ना एक दिन होगा और ऐसी गुरूपौर्णिमा हर एक सेवक के जीवन में प्रवाहित जल्दी हो यही वं. दादा जी और परम पूज्यनिय बाबा के चरणों में हाथ जोड़कर, नतमस्तम होकर विनम्र प्रार्थना है।

‘kHk Hkor

tUe tUe dk lod

मेरे वजूद का एक एक कतरा गुरू की इनायत ने बनाया है

बिना अखण्ड कृपा के उसका राज मालिक को समझ में न आया है

मुझ नाचीज को भी बिठा के गोद में अपनी हर कर्म और दोष मेरा गुजरे वख्तों से हटाया है

कितने जन्में से मैं गुनाह किये जाता हूँ

मेरी खताओं को मुस्कराकर माफ फरमाया है

तेरा जर्रा हूँ भला मैं तो किस काबिल हूँ

सर तेरे दर पर झुका कर यही सबक पाया है

कि रोम–रोम से झुक कर तुझे मैं सजदा करूँ

यही आज मेरी आत्मा ने मुझे धीमे से समझाया है

अपने जीवन में यही तो मैंने पाया है

&joh

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible